डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-तीसरा | जुलाई -2010 | मासिक पत्रिका

ऐहे ते देश पराया ओए सजना 4

कभी ऐसा भी समय आता है 5
परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन

शिष्य 11
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

प्रेम-विरह 30
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के
मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी.एस. आश्रम - राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 09950 55 66 71 - राजस्थान व 09871 50 19 99 - दिल्ली
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-09928 92 53 04, 09667 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी
सहयोग : रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 100 | Website : www.ajaibbani.org

ऐहे ते देश पराया ओए सजना

ऐहे ते देश, पराया ओए सजना,
तू प्यार क्यों ऐना पाया ओए सजना, (2)
ऐहे ते देश, पराया ओए सजना।

1. आया जो ऐथे, सबने तुर जाणा,
रहना ना ऐथे, कोई राजा राणा, (2)
जिंदगी बिरछ दी, छाया ओए सजना,
तू प्यार क्यों ऐना.....

2. कोई दिन ऐथे, रैन बसेरा,
झूठे सब नाते, कोई ना तेरा, (2)
सतगुरु ने, समझाया ओए सजना,
तू प्यार क्यों ऐना.....

3. करके सिमरन, मन समझा लै,
भुल्लां गुरु तो, माफ करा लै, (2)
दाते दा ना क्यों, भुलाया ओए सजना,
तू प्यार क्यों ऐना.....

4. पल्ला गुरु, कृपाल दा फड़ लै,
भवसागर तो, 'अजायब' तूं तर लै, (2)
झूठा जगत, झूठी माया ओए सजना,
तू प्यार क्यों ऐना.....

❋❋❋

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल संदेश

कभी ऐसा भी समय आता है

एक प्रेमी: कल सन्त जी ने हमें बताया था कि सभी सन्त तैयारी करके संसार में आते हैं। महाराज सावन सिंह जी को अपनी टाँग टूट जाने के कारण पाँच महीने दुख सहना पड़ा; उनके पाँच साल के कर्म और बाकी के दुख कट गए। जब सन्त संसार में तैयारी करके आते हैं तो वे शुरूआत से ही भजन-सिमरन क्यों नहीं करते?

बाबा जी: आप लोगों का दिमाग बहुत काम करता है। आप लोग भजन-सिमरन नहीं करते जो पढ़ते हैं वह आपको समझ नहीं आता क्योंकि आप उस पर विचार नहीं करते। जब तक परमात्मा चाहता है कि सन्त छिपे रहें तब तक उन्हें भी और लोगों की तरह दुखों का सामना करना पड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे, ''मेरा जन्म पंजाब के जिला फरीदकोट में होना था लेकिन कुछ कारणों की वजह से लुधियाना में हुआ।''

अगर सन्त अपना अंदरूनी पर्दा शुरूआत से ही खोल दें तो वे न भजन-सिमरन करें और न ही परमात्मा की खोज करें। आपको प्यास न लगी हो तो क्या आप पानी की तलाश करेंगे? पूर्ण सन्त जब भी संसार में आते हैं उन पर गरीबी-अमीरी का कोई असर नहीं पड़ता। वे चाहे! अमीर परिवार में पैदा हों चाहे! गरीब परिवार में पैदा हों उनकी परमात्मा की खोज वैसी ही होगी।

खोज करने के बाद जब उन्हें महात्मा मिल जाता है। महात्मा से 'नामदान' मिलने के बाद वे अपना हर मिनट भजन-सिमरन में लगाते हैं, हम लोगों की तरह समय बर्बाद नहीं करते। वे जानते हैं कि उन्हें सच्ची चीज मिल गई है। सन्त भजन-सिमरन करके लोगों को दिखाते

हैं कि किस तरह भजन-सिमरन किया जाता है और किस तरह परमात्मा को पाया जा सकता है?

आज से 35-40 साल पहले भारत में छुआ-छूत की बहुत बड़ी समस्या थी। ऊँची जाति के लोग नीची जाति के लोगों को देखना भी पसंद नहीं करते थे अगर किसी अछूत जाति का एक बूँद पानी भी किसी ऊँची जाति वाले पर पड़ जाता तो ऊँची जाति वाला गंगा का पवित्र पानी अपने ऊपर छिड़ककर अपने आपको पवित्र करता था। उस समय अलग-अलग जातियों के लिए अलग-अलग पानी के नलके थे जबकि सब नलकों में एक ही तरह का पानी आता था।

मैंने लोगों को अलग-अलग पानी रखते हुए देखा है। मेरे पिताजी भी ऐसा ही करते थे। हमारा घर उस जगह था जहाँ से आमतौर पर लोग आते-जाते थे। मेरे पिताजी ने उन आने-जाने वाले लोगों के लिए अलग-अलग किस्म का पानी रखा हुआ था।

मैं जब तकरीबन दस साल का था उस समय हमारे खेत पर एक मुसलमान नौकर हुआ करता था। एक बार हम वहाँ खेल रहे थे जब वह मुसलमान खेत से जाने लगा तो उसने हमसे कहा, ''आप लोग यह पानी मत पीना क्योंकि यह मुसलमान का पानी है।'' आप लोग जानते ही हैं अगर बच्चे को किसी बात के लिए मना किया जाए तो वह उस काम को जरूर करेगा। मैंने सोचा! मैं इस पानी को पीकर देखता हूँ कि क्या होता है? मैंने वह पानी पी लिया लेकिन मुझे कुछ नहीं हुआ क्योंकि वह पानी आम पानी की तरह ही था।

जब वह नौकर वापिस आया तो दूसरे लड़को ने उसे बताया कि मैंने उसका पानी पी लिया है। नौकर ने यह बात मेरे पिता जी को बताई। मेरे पिता जी मुझ पर बहुत गुस्सा हुए उन्होंने मुझे तब तक घर के अंदर नहीं आने दिया जब तक मुझे पंडित से पवित्र नहीं करवा दिया। पंडित ने बहुत सी सुगधिंत धूप जलाई। मेरे पिता जी ने पंडित को दो क्विंटल गेहूँ, बहुत सा घी और एक गाय दान में दी।

पंडित यह कहकर चला गया कि मैं पवित्र हो गया हूँ इसके बाद मुझे घर के अंदर आने दिया गया। मेरे पिता जी मुझ पर बहुत नाराज होकर कहने लगे, ''अगर तुमने मुसलमान का पानी नहीं पिआ होता तो मुझे इतना पैसा खर्च नहीं करना पड़ता। यह सब तुम्हें पवित्र करने के लिए किया गया है, अब तुम ऐसा मत करना।''

मैंने पिता जी से कहा, ''सब पानी एक जैसे होते हैं लेकिन उन्होंने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया।'' मेरे साथ गाँव के और भी बच्चे खेल रहे थे क्या किसी ने ऐसा सोचा कि सच क्या है?

ऐसी आत्माएं सच्चखंड से आती हैं वे इस दुनिया में दूसरी आत्माओं के लिए कुछ करती हैं क्योंकि वे शुरूआत से ही परमात्मा की खोज करती हैं। उनके पास इस तरह के सवाल होते हैं और वे दूसरे लोगों को शिक्षा देने की कोशिश करती हैं। उन्हें जब भी मौका मिलता है वे लोगों को परमात्मा और परमात्मा से जुड़ी चीजों के बारे में बताती हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि सन्त संसार में तैयारी करके आते हैं लेकिन वे संसार में आम लोगों की तरह रहते हैं क्योंकि वे लोगों को यह दिखाना चाहते हैं कि कोई भी आम इंसान सन्त बन सकता है।

मैं एक बार अपनी माता के साथ फिरोजपुर गया। फिरोजपुर रेलवे स्टेशन पर पानी बेचने वाले जोर-जोर से चिल्ला रहे थे, ''हिन्दु का पानी! मुसलमान का पानी!'' मैंने मुसलमान का पानी बेचने वाले को बुलाया तो मेरी माता ने उस पानी वाले से कहा कि तुम जाओ इसे कोई पानी नहीं चाहिए और उसने मुझे पानी पीने से मना कर दिया।

चाहे मैंने वह पानी नहीं पिआ लेकिन मेरी माता को शक हुआ कि मैं थोड़ा बहुत अपवित्र हो गया हूँ। उसने मेरे पिता जी से कहा। मेरे पिता जी बहुत जल्दी नाराज हो जाने वाले लोगों में से थे। उन दिनों कारें, जीपें नहीं थी इसलिए मेरे पिता जी पंडित को अपने कंधो पर बिठाकर ले आए वह उस पंडित को दुख नहीं देना चाहते थे क्योंकि मैं दूसरी बार अपवित्र हो गया था।

पंडित को खीर परोसी गई यह एक स्वादिष्ट खाना है हलवे की तरह यह भी बिना दाँतों के खाई जा सकती है। पंडित कहते हैं कि खीर खाने के लिए उन्हें दाँतो का इस्तेमाल करना पड़ता है। खीर खाने के बाद वे दाँत घिसाई के नाम पर पैसे माँगते हैं। मेरे पिता जी पंडित को पैसे देना भूल गए तो पंडित नाराज हो गया और उसने खीर उगल दी।

मेरे पिता जी ने सोचा! मुझे पवित्र करने के लिए जो कुछ किया गया है शायद उसमें कोई गलती हो गई है या मेरी माता ने खीर बनाने से पहले स्नान नहीं किया होगा या जो लोग उस समय वहाँ थे उनकी सोच पवित्र नहीं थी। मेरे पिता जी ने मेरी माता को स्नान करके फिर से खीर बनाने के लिए कहा। जब खीर बन गई तो मेरे पिता जी ने हमें ठंडे पानी से नहाने के लिए कहा फिर हम पंडित के सामने दोनों हाथ जोड़कर बैठ गए। जब तक पंडित खीर खाता रहा हम सब 'वाहे-गुरु' का सिमरन करते रहे।

हम सब परमात्मा के आगे प्रार्थना कर रहे थे कि इस बार खीर पंडित के पेट में ही रहे। जब पंडित ने खीर खा ली तो मेरे पिता जी ने सोचा कि शायद पिछली बार मैंने कम पैसे दिए थे इस बार मैं ज्यादा पैसे दे देता हूँ। मेरे पिता जी ने पंडित को सवा रूपये की बजाय पाँच रूपये दे दिए तो पंडित खुश हो गया और खीर उसके पेट में ही रही।

बचपन से ही मेरे अंदर छुआ-छूत की कोई भावना नहीं थी। मेरे अंदर छोटी या बड़ी जाति के लिए कोई भेदभाव नहीं था। कई बार मैं अपने परिवार के लिए बड़ी मुसीबत बन जाता था। सन्त जब भी संसार में आते हैं वे बचपन से ही अपने परिवार और दूसरे लोगों को खुले विचारों की सीख देते हैं। उनके दिल में हर किसी के लिए प्यार होता है वे सबको एक बराबर सम्मान देते हैं।

आपने बाबा जयमल सिंह जी की कहानी पढ़ी होगी। बाबा जयमल सिंह जी ने किस तरह परमात्मा की खोज की? आपने बहुत पैदल यात्रा की और आखिर स्वामी जी महाराज को खोज लिया। स्वामी जी से

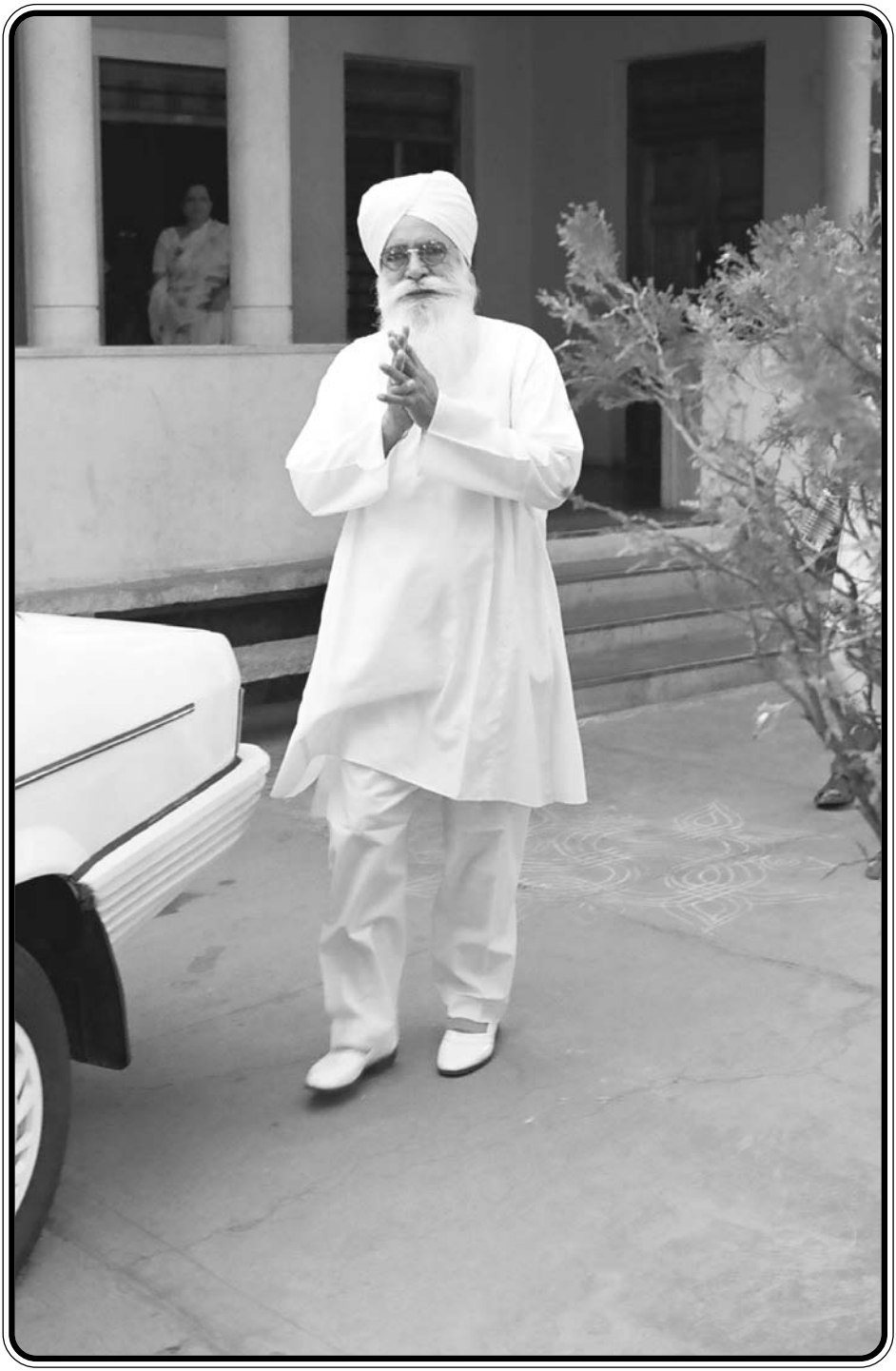

'नामदान' मिलने के बाद आपने आर्मी में रहते हुए एक मिनट भी बर्बाद नहीं किया और भजन-सिमरन में पूरा समय दिया।

रसल पर्किन्स को 16 पी.एस. आने का मौका मिला है। इसने देखा है कि मैंने सिमरन के लिए गुफा बनाई हुई थी। उस समय मेरे पास केवल एक ही सेवादार था जो मेरा खाना बनाया करता था। मैंने उस सेवादार से कह रखा था कि मेरा खाना बनाकर एक जगह रख दिया करे मुझे जब भी खाना खाना होगा मैं बाहर आकर खाना खा लिया करूंगा। मेरे पास लकड़ी का एक तख्त था जिस पर बैठकर मैं भजन किया करता था कोई आरामदायक तकिया वगैरहा नहीं था। ऐसी आत्माएं जब संसार में आती हैं तो वे शुरू से ही परमात्मा की खोज करती हैं। जब उनकी खोज पूरी हो जाती है उन्हें 'नामदान' मिल जाता है तब वह अपना पूरा समय भजन-सिमरन में देती हैं।

कभी ऐसा भी समय आता है जब संसार में कोई पूर्ण गुरु नहीं होता उन हालात में जिन आत्माओं को 'नामदान' मिलना होता है परमात्मा उस गुरु को जोकि अपना शरीर छोड़ चुका होता है उससे कहता है, ''उस जगह जाओ और उन आत्माओं को नामदान दो।''

पिछले गुरुओं और शिष्यों की ऐसी कई कहानियां हैं जिन्हे जीवित गुरु के न होते हुए भी 'नाम' मिला है। पल्टू साहब के गुरु का नाम गोविंद दास था। गोविंद दास को भीखा जी के शरीर छोड़ने के बहुत समय बाद भीखा जी से 'नामदान' मिला था। इसी तरह सुखदेव मुनि ने शरीर छोड़ने के बहुत समय बाद चरनदास जी को 'नामदान' दिया था।

हुजूर महाराज कृपाल सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''भूखे को रोटी, प्यासे को पानी देना कुदरत का नियम है।'' इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि गुरु इस दुनिया में है या नहीं। ऐसी आत्माएं जो परमात्मा की साधना करती है उनकी माँग प्रबल है तो उनकी पूर्ति गुरु से होती है और गुरु प्रकट होकर उन्हें 'नामदान' देता है।

❋❋❋

शिष्य

सन्तों के अंदर कमाल की नम्रता होती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि भिखारी में भी बहुत गुण होते हैं लेकिन हम भिखारी जैसा दिल भी नहीं बनाते अगर सतसंगी अपने अंदर भिखारी जैसे गुण धारण कर ले! वह बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है। भिखारी की माँग मामूली होती है वह किसी घर के आगे जाकर अलख जगाता है, नहीं जानता कि घरवाले उसे कुछ देंगे या नहीं!

घरवालों की इच्छा है कि वे उसे कितनी देर में खैर डालते हैं या कोई बुरा शब्द बोलते हैं। भिखारी अपनी अलख जगाए रखता है आखिर घरवाले उसे कुछ देकर ही भेजते हैं। तुलसी साहब कहते हैं:

पूर्वले पाप से हरिकथा न सुहाए।
चाहे सोवे चाहे लड़े चाहे घरां नू जाए।

पिछले कर्मों के कारण हमें परमात्मा की कथा अच्छी नहीं लगती, हम मन को महीन करने की बजाय लड़ते-झगड़ते हैं। मैं हर रोज आपके आगे कबीर साहब के सतसंग रख रहा हूँ। कबीर साहब हमें बहुत अच्छे ढ़ंग से उपदेश करते हैं कि हम हीरे खरीदने जाते हैं लेकिन हमारा मन कौड़ियाँ खरीदने का आशिक है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का एक **शिष्य** माहणां जाट था। वह लंगर खाता और आराम से सो जाता। वह किसी तरह की कोई सेवा नहीं करता था। आप जानते हैं कि प्रबंध करने वाले सेवादारों को कई मुश्किलें पेश आती हैं, वे एक-दूसरे से मदद करने के लिए कहते हैं। उनकी मदद करना हमारा फर्ज भी बनता है। माहणां जाट कहता अगर गुरु साहब कहें तो मैं आपकी मदद करने के लिए तैयार हूँ।

शिष्यों ने गुरु अर्जुनदेव जी को बताया कि माहणां जाट इस तरह कहता है। गुरु अर्जुनदेव जी ने उसे अपने पास बुलाकर कहा, ''भाई! तू लंगर खाकर सो जाता है तुझे कुछ सेवा भी करनी चाहिए।'' माहणां जाट ने कहा, ''आप जो सेवा कहें मैं करने के लिए तैयार हूँ।'' गुरु साहब ने कहा कि तू पानी की सेवा कर, सफाई की सेवा कर। माहणां जाट ने कहा, ''कोई और सेवा बताएं।''

वही **शिष्य** अच्छा है जो सन्तों से एक बार वचन कहलवाकर उनका कहना मान ले। आप जानते हैं जो बार-बार कहलवाता है उसका नतीजा ठीक नहीं निकलता। आखिर गुरु साहब ने कहा, ''तेरे लिए यही अच्छा है कि तू बाहर जाकर चिता बनाकर उसमें जल जा।'' माहणां जाट ने कहा कि मैं यह करने के लिए तैयार हूँ।

माहणां जाट ने बाहर जाकर लकड़ियों में आग लगाई और आग के चारों तरफ चक्कर काटने लगा लेकिन आग में छलांग नहीं लगाई। घूमते-घूमते सोचने लगा कि मैं गुरु का यह हुक्म भी नहीं मानता। इतनी देर में उधर से एक चोर आ गया। चोर ने उससे पूछा कि तू आग के चारो तरफ परिक्रमा क्यों कर रहा है? माहणां जाट ने अपनी सारी कहानी सुनाई कि मुझे मेरे गुरु ने चिता बनाकर उसमें जलने का हुक्म दिया है लेकिन मैं अपने गुरु से भी बागी हो गया हूँ।

जब हमारी जिंदगी पलटा खाती है तो देर नहीं लगती। चोर ने सोचा कि गुरु का हुक्म न मानने से बढ़कर और क्या जुल्म हो सकता है? चोर ने उससे कहा, ''तू यह धन ले ले और गुरु का वचन मुझे संकल्प करवा दे।'' चोर ने गुरु का वचन सकंल्प कर लिया और चिता में छलांग लगाकर जल गया।

चोरी किसी बड़े घर में हुई थी। चोर की तलाश करते हुए पुलिस वहाँ आ गई। आप जानते हैं कि चोर वही जिसके पास माल मिले। माहणां जाट ने पुलिस वालों को बहुत समझाया लेकिन उसे बहुत सख्त सजा भुगतनी पड़ी।

कबीर साहब कहते हैं, ''कामी, क्रोधी तर जाते हैं लेकिन बेविश्वासा कभी नहीं तरता।'' कबीर साहब का एक शिष्य घर से भजन-सिमरन करने के लिए आया लेकिन वह खाना खाकर सो जाता कोई काम नहीं करता था अगर कोई उससे कहता तो वह उसे आँखें निकालकर कहता, ''तुम मुझे कुछ कहने वाले कौन होते हो?'' कबीर साहब उसे बड़े प्यार से समझाते हैं, ''देख प्यारेया! एक दिन ऐसा आएगा जब तू सो जाएगा, तुझे कोई नहीं उठाएगा। तू जागकर परमात्मा की भक्ति कर।'' गौर से सुनने वाला शब्द हैः

कबीर सूता किआ करहि, उठि कि न जपहि मुरारि।
इक दिन सोवनु होइगो, लांबे गोड पसारि।।

कबीर सूता किआ करहि, बैठा रहु अरु जागु।
जा के संग ते बीछुरा, ता ही के संगि लागु।।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेया! तू सोकर समय बर्बाद न कर। उठकर उस 'शब्द-ताकत' के साथ जुड़ जिससे तू बिछुड़ा हुआ है।''

दिवस गवाया खेलकर रात गवाई सोए।
हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाए।

आप अपने शिष्य को प्यार से समझाते हैं, ''तेरे साथी यह संसार छोड़कर चले गए हैं। तू रात को सोकर समय बर्बाद कर रहा है, इसकी कद्र कर 'शब्द-नाम' की कमाई कर।''

कबीर सन्त की गैल न छोड़िये, मार्ग लागा जाओ।
पेखत ही पुनीत होए, भेटत जपिए नाओ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''सन्त-सतगुरु आपको जो रास्ता बताते हैं आप उस पर विश्वास के साथ चलें अगर आपको सन्तों की संगत-सोहबत मिलेगी तो आपके कुछ पाप उनके दर्शनों से कट जाएंगे। सन्त आपसे भजन-सिमरन करवाएंगे जिससे आपकी आत्मा बहुत आसानी

से निर्मल हो जाएगी। आप सन्तों की संगत-सोहबत से फायदा उठाएं।'' कबीर साहब कहते हैं:

साधु से झगड़ा भला साकत स्यों नहीं मेल।

आप कहते हैं, ''आप सदा ही साधु सन्तों की संगत में रहें;य उनके बताए हुए रास्ते को न छोड़ें।''

कबीर साकत संग न कीजिए, दूरों जाइए भाग।
वासन कारो परसिए, तो कछ लागै दाग।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में रहने से आपका फायदा ही फायदा है आप साकत की संगत न करें। साकत को देखकर दूर से ही भाग जाएं अगर साकत की वासना भी आ गई तो आपको और आपकी कुल को दाग लग जाएगा।''

मैं जब पहली बार सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया, वहाँ का चीफ मुझसे मिलने आया। वह बाहर के देशों में काफी घूमा-फिरा हुआ था, अच्छा तर्जुबेकार आफिसर था। उसने दूसरे विश्वयुद्ध की लड़ाई में जापान व वियतनाम में हिस्सा लिया था। उसने मुझसे सवाल किया कि इंसान अपने बच्चों को क्या दे? मैंने उससे कहा, ''इंसान अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे चाहे धन-दौलत न दे अगर बच्चों के पास अच्छी शिक्षा होगी तो वे धन-दौलत अच्छे तरीके से कमाएंगे, अच्छी जिंदगी व्यतीत करेंगे अगर हम उन्हें अच्छी शिक्षा नहीं देंगे तो वे विषय-विकारों, शराबों-कबाबों में पड़ जाएंगे और धन-दौलत उड़ाते हुए नहीं सोचेंगे।''

जब लुकमान हकीम ने देखा कि मेरा लड़का बुरी सोहबत में पड़ गया है तो उन्होंने उसे समझाने की कोशिश की कि वह अमुक लड़के की सोहबत न करें। लड़के ने कहा, ''पिता जी! आप फिक्र न करें मैं उसके रंग में नहीं रंगूगा।'' लुकमान हकीम समझदार थे। वह जानते थे कि बुरी संगत का असर अवश्य होता है। लुकमान हकीम ने एक कोयला अपने लड़के के हाथ पर रखकर कहा, ''देख बेटा! ख्याल रखना

कहीं तेरा हाथ काला न हो जाए?'' लड़के ने एकदम जवाब दिया, ''पिता जी! यह कैसे हो सकता है कि मैं कोयला हाथ में रखूं और मेरा हाथ काला न हो।'' लुकमान हकीम ने कहा, ''फिर तू कैसे आशा रख सकता है कि बुरी संगत में रहकर नेक-पाक रहेगा।''

कबीर साहब साकतों का हाल बता रहे हैं कि क्या हमें उनके नजदीक जाना चाहिए? गुरु रामदास जी कहते हैं:

साकत संग बहुत गुरझी भरया, क्यों कर तान तनीजे।
तन्त सूत कुछ निकसे नाहीं, साकत संग न कीजे।

आप कहते हैं कि साकत का मन बहुत उलझा हुआ होता है वह नेक बात सोच ही नहीं सकता। हम उलझे हुए सूत से कुछ भी नहीं बुन सकते। साकत से लाखों कोस दूर रहने में ही फायदा है।

कबीरा राम न चेतयो, जरा पहुँचयो आए।
लागी मंदर द्वार ते, अब क्या काढ़या जाए।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अच्छे भाग्य हों तो इंसान सतसंगियों के घर में पैदा होता है। बचपन से ही ख्याल गुरु के चरणों में लगा होता है। जो काम हम जवान अवस्था में कर सकते हैं वह काम बुढ़ापे में मुश्किल होते हैं। 'नाम' की कमाई हम किसी भी अवस्था में करें कामयाब हो जाते हैं। बुढ़ापे में हमारे ख्याल संसार में ज्यादा फैले होते हैं, जवान अवस्था में कम फैले होते हैं। जवान अवस्था में हम साधना और मुश्किल से मुश्किल अभ्यास कर सकते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''यह शरीर एक मंदिर है इसे कई तरह की आग लगी हुई है अगर मंदिर के द्वार पर आग लग जाए, हम उसमें से कोई वस्तु निकालना चाहें तो नहीं निकाल सकते। इसी तरह दाढ़ी-मूँछ सफेद हो जाते हैं। मुँह में दाँत नहीं रहते। मन नहीं टिकता। कभी गिट्टे तो कभी पीठ दर्द करती है क्या इस हालत में हम साधना कर सकेंगे?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

घूंघर बाजे तो मन लागे।

अगर आपमें थोड़े बहुत स्वाँस बाकी हैं तो आप डरे न। आपको गुरु याद आता है और आपके पास सिमरन है तो गुरु आकर आपकी संभाल करेगा। गुरु मिला हो, नाम मिला हो तो ही हमारा ख्याल उस तरफ जाएगा अगर उस समय आप यह कहे कि अब हम थ्योरी समझेंगे 'नाम' की कमाई करेंगे तो नहीं कर सकते।

कबीर कारण सो भयो, जो कीनों करतार।
तिस बिन दूसर को नहीं, एकह सिरजनहार।।

कबीर साहब अपनी संगत को बहुत प्यार से समझाते हुए कहते हैं कि हमारी जिंदगी में बच्चे की मौत, पति की मौत, पत्नी की मौत और बेरोजगारी जैसी बहुत तकलीफें आती हैं। हम लोग आमतौर पर

सतगुरु के पास जाकर अपनी तकलीफें बताते हैं। सतगुरु कहते हैं, **''प्यारे ओ! जो तुम्हारी प्रालब्ध बन चुकी है इसे प्यार से भोगें, चूं-चरां न करें। मन को दखल न देने दें। जब यह मन दखल दे तो इससे कहें कि यह किसी और का नहीं तेरा किया हुआ ही कर्म है।''**

कबीर साहब कहते हैं, ''जगत में जो कुछ हो रहा है वह परमात्मा कर रहा है। परमात्मा के हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। हम लोग ऐसे ही एक-दूसरे को दोष देते हैं या गर्व करते हैं अगर मैं उसकी मदद न करता तो वह भूखा ही मर जाता। इस तरह हम भला-बुरा कहकर अपने बुरे कर्म बना लेते हैं।''

कबीर फल लागे फलन, पाकन लागे आम।
जाए पहुँचह खसम को, जो बीच न खाही काम।।

कबीर साहब आम के पेड़ की मिसाल देते हैं कि आम के पेड़ को बहुत बूर लगता है लेकिन जितना बूर लगता है उतनी डोडियां नहीं बनती। बहुत सा बूर झड़ जाता है, सभी डोडियाँ नहीं पकती। बहुत से आमों को कौए, तोते चोंच मारकर खराब कर देते हैं; बहुत से आम जमीन पर गिर जाते हैं। थोड़े से ही आम पेड़ पर पकते हैं जो मालिक के हाथ आते हैं उनका रस मीठा होता है, खाने वाला उनकी कद्र करता है। इसी तरह थोड़े से ही **शिष्य** गुरु मार्ग पर चलते हैं बाकी कामनाओं में फँसकर अपना भजन सिमरन छोड़ जाते हैं।

कबीर साहब हमें इशारा देकर समझाते हैं कि जब सन्त-सतगुरु संसार में आते हैं तब बहुत लोग उनके पास जाते हैं लेकिन सभी ध्यान से सतसंग नहीं सुनते। उनमें से कई इधर-उधर की बातें करके अपने-अपने घरों को चले जाते हैं; सतसंग पर अमल करने वाले बहुत कम होते हैं। जो सतसंग पर अमल करते हैं वे 'नाम' लेते हैं; उनमें से बहुत कम 'नाम' की कमाई करते हैं। जो 'नाम' की कमाई करते हैं वे ध्यान नहीं देते कि कौन सी चीज उनके भजन को खराब कर रही है? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारे भजन को खराब करते हैं।

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।

इस तरह संगत में कोई विरला **शिष्य** ही सतगुरु के जीवनकाल में पूर्ण होता नजर आता है। ऐसे शिष्य पर गुरु खुश होकर उसे अपना आशिर्वाद देता है, ''मैं खुश हूँ एक तो बहादुर निकला।'' आप जानते हैं अगर कोई बच्चा अपने पाँव पर खड़ा हो जाता है तो उसका पिता खुश होकर कहता है कि मैं इससे बेफ्रिक हूँ कि यह अपना बोझ खुद उठाता है और मेरी मदद भी करता है।

कबीर ठाकर पूजह मोल ले, मन हठ तीर्थ जाहे।
देखा देखी स्वाँग धर, भूले भटका खाहे।।

हम लोग एक-दूसरे को देखकर स्वाँग करते हैं कि यह तीर्थयात्रा पर गया है हम भी तीर्थयात्रा करें! यह ठाकुर खरीद रहा है हम भी ठाकुर खरीदें! इसने भगवे कपड़े पहने हैं हम भी भगवे कपड़े पहनें!

एक बार किसी ने गुरु गोविंद सिंह जी से पूछा कि महाराज जी! कितने प्रकार के **शिष्य** हैं? सच्चा शिष्य कैसा है? गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा, ''कुछ एक-दूसरे को देखकर शिष्य बन जाते हैं कि मेरा पड़ोसी शिष्य बना है मैं भी शिष्य बन जाऊँ! कुछ ऐसे हैं जो देखते हैं कि शिष्य बनने से उसका कारोबार अच्छा चल रहा है, मैं भी **शिष्य** बन जाऊँ तो मेरा कारोबार भी अच्छा चल पड़ेगा।''

हममें भी बहुत से ऐसे प्रेमी हैं जो कहते हैं अगर तू 'नाम' ले ले तो हम अपनी लड़की का रिश्ता तेरे साथ कर देंगे, तेरा कारोबार अच्छा कर सकते हैं। कुछ लालचवश **शिष्य** बन जाते हैं। कोई बेरोजगारी तो कोई बीमारी का मारा हुआ आता है लेकिन जब उनका मतलब हल हो जाता है तो वे इस रास्ते को ही छोड़ जाते हैं।

भरोसे वाले शिष्य के अंदर से फूट-फूटकर निकलता है कि मुझे कोई ऐसी हस्ती मिले जो मेरी आत्मा को शान्ति दे! ऐसे भरोसे वाला **शिष्य** अपने जीवनकाल में ही कामयाब हो जाता है।

कबीर पाहन परमेश्वर किया, पूजे सब संसार।
इस भरवासे जो रहे, बुढ़े काली धार।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पत्थर भक्ति सबसे निकृष्ट है, यह नाश होने वाली भक्ति है।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

जो पत्थर की पाई पाए, ताकि घाल अजाई जाए।
ठाकुर हमरा सदबोलंता, सर्व जिया को दान देता।

आप कहते है कि हमारा ठाकुर बोलता है, हर सवाल का जवाब देता है वह जीवित पुरुष है। पत्थर न बोलता है और न ही कोई सेवा परवान करता है। जो इस भरोसे में रहेंगे वे नरकों में चले जाएंगे। जो पत्थर की मूर्ति घड़ता है, उसकी छाती पर पैर रखकर उसे छैनियों से ठीक करता है पत्थर उसे कुछ नहीं कहता तो पूजने वाले को पत्थर क्या कहेगा?

धन्ना भक्त के बारे में लोग कहते हैं कि उसने परमात्मा को पत्थर में से पाया लेकिन यह सच नहीं। गुरु ग्रन्थ साहब में धन्ना भक्त की बानी पढ़कर देखें, उसमें आता हैः

गोविंद गोविंद संग, नाम दियो मन लीन्हा।
आध दाम को छीपरो, होया लोखीना।
तनना बुनना त्यागके, प्रीत चरण कबीरा।
नीच कुला जुलाहरा, भया गुणी गहीरा।
सैन नाई दुतकारया, ओह घर घर सुणया।
हृदय बसया पारब्रह्म, भक्ता ने गिणया।
ऐह बिध सुनके जाटरो, उठ भक्ति लग्गा।
मिले प्रतख गोसाईया, धन्ना बड़भागा।

धन्ना जाट कहते हैं, ''आधी कौड़ी का छीम्बा नामदेव लाखों गुणों वाला हो गया, चारों वर्णों के लोग उसे पूजने लगे। रविदास के कुल के लोग मरे हुए जानवरों को उठाने का काम करते थे लेकिन देवी-देवता भी उसे तिलक लगाने लगे और उसकी मूर्ति की पूजा करने

लगे। यह सब 'नाम' का ही प्रताप था। कबीर साहब छोटी जाति जुलाहों के घर में पैदा हुए लेकिन बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं ने उन्हें बहुत गुणों वाला समझकर उनकी पूजा की। सैन नाई लोगों के घरों में संदेश देता था लेकिन जब उसने परमात्मा की भक्ति की तो वह भी इन परमगति प्राप्त करने वालों में गिना गया। इन परमगति प्राप्त करने वालों को देखकर मैं भी भक्ति में लगा तो मुझे प्रत्यक्ष परमात्मा मिला।''

धन्ने धन पाया धरनी धर, मिल जन सन्त समान्या।

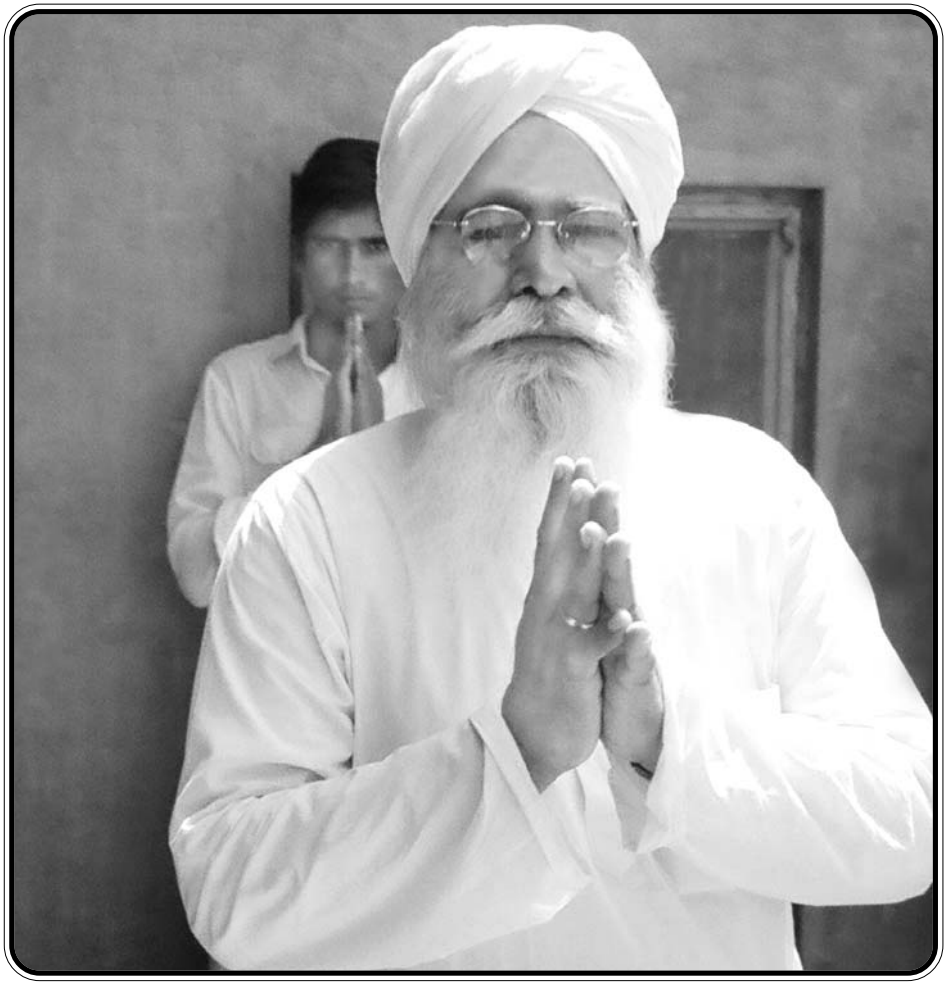

जिस परमात्मा ने धरती आसमान बनाए हैं इस संसार की रचना की है मुझे वह परमात्मा सन्तों से मिला। हम सब गुरु ग्रन्थ साहब को पढ़ते और मानते हैं फिर भी यह कह देते हैं कि धन्ना ने पत्थर में से परमात्मा को पाया लेकिन जो इस भरोसे रहेंगे वे वैतरणी नदी पार नहीं कर सकेंगे, डूब जाएंगे।

कबीर कागज की ओबरी, मसके करण कपाट।
पाहन बोहरी पिरथमी, पंडित पाड़ी बात।।

कबीर साहब कहते हैं कि वेद-शास्त्र, पोथी और उन्हें लिखने वाली स्याही कपाट है। हम आमतौर पर यह कह देते हैं कि वेद-शास्त्र पढ़कर हमारे कपाट खुल जाएंगे। कुछ दुनिया पत्थरों को पूज-पूजकर डूब गई है और पंडित कुछ लोगों को लूट-लूटकर खा रहे हैं।

एक बार कबीर साहब कहीं जा रहे थे उन्होंने देखा कि एक पंडित ने महाजन की दुकान पर भागवत का भोग डाला। उस पंडित को कम पैसे मिले इसलिए वह झगड़ा कर रहा था। यह देखकर कबीर साहब ने संगत से कहा, ''देखो! पंडितों की यह हालत है।'' सन्त-महात्मा वेद-शास्त्रों की निन्दा नहीं करते। वेद-शास्त्र दूसरी मंजिल तक का बयान करते हैं अगर हम दूसरी मंजिल तक पहुँचे तो ही वेद-शास्त्रों को सच मानेंगे; हम वेद-शास्त्र पढ़कर मुक्त नहीं हो सकते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, '' जो लोग वेदों की तालीम के मुताबिक अंदर नहीं जाते वे लोग वेदों के चोर हैं। जो अंदर ही नहीं गए वे वेदों का अर्थ क्या समझ सकते हैं?''

आप प्यार से कहते हैं जो आदमी अंदर जाता है वहीं गुरु नानकदेव जी और कबीर साहब की बानी को समझ सकता है। अंदर पहुँचे हुए महात्मा आपस में सहेलियों की तरह हैं, ये सब मालिक के दरबार में मिलते हैं। लोग पत्थर पूज-पूजकर मौलवियों और पंडितों के पीछे लगकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं।

कबीर काल करन्ता अबह कर, अब करता सोई ताल।
पाछह कछु न होवेगा, ज्यों सिर पर आवे काल।।

कबीर साहब कहते हैं जो कल करना है वह आज कर लें जो आज करना है वह अभी कर ले! बाद का क्या भरोसा पता नहीं कब साँस की गतिविधि रूक जाएगी? महात्माओं के कहने का भाव है कि हमें विचार ही नहीं करते रहना चाहिए कि पहले कारोबार कर लें रात बड़ी है फिर भजन-अभ्यास कर लेंगे। जो समय मिला है उससे लाभ उठाने में ही फायदा है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

जे वेला वक्त विचारिए कित वेले भक्ति होए।

कबीर ऐसा जन्तु इक देखया, जैसी कोई लाख।
दीसे चंचल बहु गुणा, मतहीणा नापाक।।

एक बार कबीर साहब बाहर गए वहाँ उन्होंने एक पांखडी आदमी को उपदेश करते हुए देखा जो यह कह रहा था कि कबीर के पास न जाएं, मैं ही सच्चा गुरु हूँ। कबीर साहब ने संगत से कहा, ''मैंने आज एक ऐसा शख्स देखा जिसने बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए थे और वह लेक्चर भी अच्छा दे रहा था। जैसे लाख को धो लेने से लाख बहुत चमकती है इसी तरह वह मतहीन अंदर से नापाक था अगर उसे ज्ञान होता तो वह जानता कि परमात्मा हर किसी को देखता है कि इसकी चढ़ाई कहाँ तक है?''

आत्मघाती महापापी।

किसी की आत्मा के साथ घात करने से बढ़कर और क्या पाप हो सकता है? महाराज सावन-कृपाल सदा यही कहते रहे, ''प्यारेयो! पहले आप अंदर जाएं, अपने मन को शान्ति दें फिर औरों के ठेकेदार बनें।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु जिन्हा का अंधला, सिख भी अंधे कर्म करेंण।
ओह चल्लण भाणें आपणे, नित झूठो झूठ बुलेंण।

किसी सतसंगी ने महाराज सावन सिंह जी के पास विनती की कि गरीब दास के अमोलक वचनों में यह लिखा हुआ है कि जब तक दसवें द्वार में न पहुँचे 'नाम' नहीं देना चाहिए। महाराज सावन सिंह ने कहा, ''मैं तो कहता हूँ कि सच्चखंड पहुँचकर भी 'नाम' नहीं देना चाहिए अगर गुरु आपकी जिम्मेवारी उठाता है आपको हुक्म देता है तो आप उसका समझकर ही काम करें।''

आप अपने अंदर झाँककर देखें! क्या आप पूरे हैं? क्या आप वहाँ पहुँचते हैं? क्या आप और गुरु एक हो चुके हैं? लेकिन अंदर अज्ञान है, मैल है; बुरे ख्याल और ईर्ष्या है।

कबीर मेरी बुद्धि को, यम न करे तिरस्कार।
जिन एह जमुया सृजया, सो जपया परवदगार।।

सुंदरदास, महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था। बहुत से प्रेमियों ने उसे देखा है। वह महाराज सावन के दर्शनों के लिए अपने गाँव से पैदल चलकर जाया करता था। ऐसा नहीं कि उसके पास पैसे नहीं थे, वह बहुत जमीन का मालिक और अपने गाँव का नम्बरदार था। फरीदकोट के राजा के साथ उसका बहुत प्यार था।

हमारे गाँव के नम्बरदार ने उससे कहा, ''सुंदरदास! तू साईकल चलाना सीख ले।'' सुंदरदास ने उससे कहा, ''परमात्मा ने चलने के लिए टाँगे दी हैं।'' एक बार नम्बरदारों की सभा लगी कि उनमें से जो सुंदर लगेगा और जिसने अच्छे कपड़े पहने होंगे उसे ईनाम मिलेगा। वह ईनाम सुंदरदास को मिला था। जिन लोगों ने सुंदरदास को देखा है वे जानते हैं कि सुंदरदास का चेहरा महाराज सावन की तरह विशाल और आकर्षित करने वाला था।

एक बार किसी नम्बरदार ने सुंदरदास से पूछा कि तू धर्मराज को क्या जवाब देगा? सुंदरदास ने कहा, ''मेरा धर्मराज के पास क्या काम? मैंने तो अपने गुरुदेव के पास जाना है।'' वह अपने गुरुदेव के पास ही

गया, उसको उसके गुरु महाराज लेने के लिए आए। उसने शरीर छोड़ने से एक घंटा पहले बताया कि अब तैयारी है। उसका क्रिया-क्रम और प्रशाद खुशी-खुशी किया गया।

किसी ने कबीर साहब को ताना मारते हुए कहा, ''ऐ जुलाहे! न तू जप करता है न तप करता है और न माला ही फेरता है; तू स्वर्गों में कैसे जाएगा?'' कबीर साहब ने कहा, ''मेरी बुद्धि को यम कुछ नहीं कह सकता क्योंकि मैं सृजनहार परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा में मिल चुका हूँ। मेरा स्वर्गों में क्या काम?''

कबीर कस्तूरी भया, भँवर भए सब दास।
ज्यों ज्यों भक्त कबीर की, त्यों त्यों राम निवास।।

कबीर साहब उस आदमी से कहते हैं, ''कबीर कस्तूरी बन गया है और भँवरे मेरी संगत हैं। ये भँवरे कस्तूरी की महक लेने के लिए आते हैं। जिस जगह कबीर का नाम लिया जाता है कबीर की भक्ति होती है उस जगह परमात्मा का निवास है।'' जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं उनके अंदर परमात्मा प्रकट होता है। सन्त क्या होते हैं यह समझने वाली बात है।

जब मेरे गुरुदेव ने मुझ पर दया-मेहर की, उस समय बहुत से लोग बैठे थे। मेरे गुरुदेव ने कहा, ''इसमें से महक आएगी और यह महक सात समुद्र पार कर जाएगी।'' वहाँ बैठे एक आदमी ने कहा कि इसे कोई जीप पर तो बिठाता नहीं, हवाई जहाजों में कौन सैर करवाएगा? लेकिन जब यह सब कुछ सच हुआ तो वही लोग विरोधता करने लगे।

आप सोचकर देखें! सन्तों पर ऐतबार करना खाला जी का बाड़ा नहीं है। कबीर साहब जो कुछ बता रहे हैं यही मेरे गुरुदेव कृपाल ने कहा था। हुजूर कृपाल कस्तूरी थे जिसने भँवरा बनकर आपकी वासना ली उसमें से भी महक आने लगी। यह उस महापुरुष कुल मालिक

कृपाल का वचन था। मैं दिल्ली और जिस भी मुल्क में गया, मैंने यही पूछा कि क्या कोई ऐसा आदमी है जिसने मुझे पहले देखा हो या जानता हो? कबीर साहब कहते हैंः

हमरा बड़तो बड़ा विवेकी, आपे सन्त कहावे।

कबीर गहगत पड़यो कुटम्ब के, कांठह रह गयो राम।
आए पड़े धर्मराय के, बीचहे धूमा धाम।।

कबीर साहब कहते हैं, ''तेरे पोते, पड़पोते और दामाद हैं; तू इतने बड़े कुटुम्ब में मस्त होकर परमात्मा को भूल गया है। इन सबके होते हुए धर्मराज का दूत आ जाता है और कान से पकड़कर ले जाता है लेकिन कोई इनसे छुड़वा नहीं सकता, तेरी मदद नहीं कर सकता।''

कबीर साकत ते सूकर भला, राखहे अच्छा गाँव।
ओह साकत बपुरा मर गया, कोई न लेहे नाँव।।

आमतौर पर सन्तों की बानी में साकत का शब्द लिया जाता है। साकत उसे कहते हैं जो किसी के उपकार को नहीं मानता। साकत का दिल काले कंबल की तरह होता है। उस पर चाहे जो उपकार कर ले वह स्वार्थी होता है। साकत पुरुष से सूअर अच्छा है बेशक सूअर की योनि गंदी है; वह गंद खाता है लेकिन साकत से फिर भी अच्छा है क्योंकि वह कर्मों का हिसाब-किताब चुका रहा है; गंद खाकर गाँव की सफाई तो रखता है। साकत और कर्म बनाकर नरक को जाता है।

सूअर मर जाता है तो लोग यह कहते हैं कि यह गन्द खाकर गाँव की सफाई तो रखता था। साकत मरता है तो कोई उसे याद नहीं करता। लोग दो-चार दिन बात करके चुप हो जाते हैं।

कबीर कौडी कौडी जोड़के, जोड़े लाख करोड़।
चलती वार न घट मिलयो, लई लंगोटी तोड़।।

आप कहते हैं, ''कौड़ी कौड़ी जोड़कर लाखों-करोड़ों का धन इकट्ठा कर लेते हैं लेकिन उस धन को नेक कर्मों में नहीं लगाते। अन्त समय में तो लंगोटी भी तोड़ देते हैं।'' आमतौर पर मारवाड़ी लोग कमर पर सोने की जंजीर पहनते थे, आजकल तो चाँदी की जंजीर भी पहन लेते हैं। पिछले जमाने में लंगोट भी पहनते थे, चाँदी की करन्सी होती थी; कुछ लोग लंगोट के कोने में पैसे बाँधकर रखते थे। जब मौत आती है तो मारवाड़ी लोग जंजीर तोड़ देते हैं और लंगोट में ढूँढते हैं कि कहीं बूढ़े के पास पैसे तो नहीं?

सुंदरदास कहा करते थे, ''कंजूस माया से कहता है कि तू मेरे घर आ गई है तुझे बधाई हो। मैं तुझे अच्छी अच्छी अलमारियों में रखूंगा। न मैं खुद खाऊंगा न किसी और को खाने दूँगा। मैं अपना यह स्वभाव अपने पौत्र-पौत्रों को भी बताकर जाऊँगा कि कहीं माया को अच्छी जगह मत लगा देना। चाहे मेरे पास पंद्रह बीस करोड़ भी क्यों न हो जाएं फिर भी मैं अपने लड़को से कहूँगा कि ताजा कमाओ और ताजा खाओ।'' परमात्मा कंजूस को चाहे कितना भी धन क्यों न दे दे वह एक पाई भी नहीं खर्चता। कबीर साहब कहते हैं:

सूमे धन रखन को दीया, मुग्ध कहे धन मेरा।
यम का डंड मूँड में लागा, खिन्न में करे नबेरा।
हर जन उतो भक्त सदावे, आज्ञा मन सुख पाई।

मालिक के प्यारे मालिक की आज्ञा में रहते हैं, माया एक तरफ से आती है तो वे उसे दूसरी तरफ लगा देते हैं। कंजूस माया को जोड़ते हैं क्योंकि उन्हें माया रखने के लिए मिली है। हम अपने आस-पास ऐसे लोग भी देखते हैं जो खाना भी नहीं खा सकते।

सुंदरदास हँसते हुए कहा करते थे कि एक कंजूस ने फसल काटने के समय एक रुपए का घी लिया। फसल काट ली लेकिन वह घी उतने का उतना ही रहा। उस घी को उसने एक रूपए में ही बेच दिया। उस कंजूस ने दूसरे कंजूस से पूछा कि तूने फसल काटते हुए घी खाया?

उसने कहा, ''हाँ बहुत घी खाया, एक रूपये का लिया था और सवा रूपये का बेच दिया।'' उसने उससे पूछा कि तू खाना कैसे खाता था? उसने बताया, ''मैं उस घी वाले पीपे के ऊपर से रोटी घुमाकर मुँह में डाल लेता था, रोटी को उसके साथ नहीं लगने देता था।'' दूसरे कंजूस ने कहा, ''मैंने उस घी वाले बर्तन को छत के साथ टांग दिया और उसके नीचे बैठकर रोटी खा लिया करता था।'' कबीर साहब कहते हैंः

पानी बाड़ो नाव में, घर में बाड़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही स्यानों काम।

माया खर्च करने के लिए है अगर नाव में ज्यादा पानी भर जाए तो उसे निकाल देना चाहिए। घर में ज्यादा पैसे हों तो उन पैसों को अच्छे काम में लगाना चाहिए।

कबीर वैष्णो हुआ ता क्या भया, माला मेली चार।
बाहर कंचन बारहा, भीतर भरी पंघार।।

किसी ने कबीर साहब से कहा कि तेरे तो साधुओं वाले चिह्न ही नहीं हैं। तेरे कपड़े भगवे नहीं हैं, तेरे गले में एक माला भी नहीं है; तू किस तरह भगवान की भक्ति कर रहा है? कबीर साहब उससे कहते हैं, ''क्या हुआ अगर तूने गले में चार मालाएं पहन ली हैं? बाहर से दिखने में तू बहुत अच्छा दिखाई दे रहा है लेकिन तेरे अंदर काम, क्रोध, अहंकार और ईर्ष्या भरी हुई है।''

सतयुग में सोने की माला पहनी जाती थी। त्रेता युग में चांदी की माला पहनी जाती थी। द्वापर युग में ताम्बे की माला पहनी जाती थी और आज कलयुग में ऊन, रूद्राक्ष या काठ की माला पहनते हैं।

कबीर रोड़ा होये रहो बाट का, तज मन का अभिमान।
ऐसा कोई दास होवे, ताहे मिलै भगवान।।

एक आदमी कबीर साहब के पास 'नाम' लेने के लिए आया। उसने कबीर साहब से सवाल किया, ''महाराज जी! परमात्मा को प्राप्त करने के लिए नम्रता धारण करनी चाहिए या रास्ते के पत्थर जैसा होना चाहिए?'' कबीर साहब ने कहा, ''प्यारेया! रास्ते का पत्थर होना भी ठीक है लेकिन यह आसान नहीं क्योंकि हर किसी की ठोकरें सहनी पड़ती हैं। लोग ताने-मेहने मारते हैं, ये भी एक किस्म की ठोकरें ही हैं; हमें अभिमान छोड़ देना चाहिए।'' हजरत बाहू कहते हैंः

जियोंदे मर रहना, वेश फकीरी बहिए हू।
जे कोई सिट्टे गुद्दड कूड़ा, वांग अरूड़ी रहिए हू।
जे कोई कड्डे गाल उलाम्भा, जी जी ओहनू कहिए हू।

यह तो वह मैदान है जहाँ जीते जी मरना पड़ता है, फकीरी धारण करनी पड़ती है। चाहे! कोई हमारे ऊपर गंद फैंके या गालियाँ निकाले हमें बुरा नहीं मानना चाहिए। इस संसार में हर आदमी अपना-अपना सौदा बेचने के लिए आया है।

एक बाप-बेटा बाजार गए। वहाँ एक शख्स गालियाँ निकाल रहा था। बेटे ने अपने पिता से कहा, ''वह आदमी गालियाँ निकाल रहा है।'' पिता ने कहा बेटा! तू उधर मत देख यह संसार एक बाजार है यहाँ हर आदमी अपना अपना सामान बेच रहा है। जिसको जिस सामान की जरूरत होती है वह खरीद लेता है हम इसके ग्राहक नहीं हैं। सन्त-महात्मा दुनिया के ताने-मेहनों के ग्राहक नहीं होते।

महाराज सावन कहा करते थे, ''सन्त चुप करके अपनी जीत प्राप्त कर लेते हैं वे इस तरफ तवज्जो ही नहीं देते। दुनिया का बोलबाला यहीं रह जाता है।''

कबीर रोड़ा हुआ तां क्या भया, पंखी को दुख दे।
ऐसा तेरा दास है, जिओ धरनी मेंहे खेह।।

कबीर साहब कहते हैं क्या हुआ अगर हम रास्ते के पत्थर हो गए। लोगों के ताने-मेहने और ठोकरें सहते हैं। तेरा दास तो धरती की धूल की तरह है। धरती की धूल बन जाने से भी क्या होता है? धूल उड़कर अंगों को लगती है, आँखों में पड़ती है।

कबीर खेह हुई तां क्या भया, ज्यों उड़ लागे अंग।
हर जन ऐसा चाहिए, ज्यों पानी सर्वंग।।

कबीर पानी हुआ तां क्या भया, हीरा का सा होय।
हर जन ऐसा चाहिए, जैसा हर जी होय।।

कबीर साहब कहते हैं, ''धूल भी किसी के अंग को लगेगी उसे कष्ट देगी। आप पानी की तरह बन जाएं! वह सारे अंगों को लगता है फिर कहते हैं कि पानी बनने से भी क्या हो जाएगा पानी गर्मी में गर्म और सर्दी में ठंडा हो जाता है सब सुख नहीं देता। भक्त को परमात्मा जैसा होना चाहिए जो गुण परमात्मा में हैं वही गुण भक्त में होने चाहिए। परमात्मा किसी का बुरा नहीं चाहता सबका भला चाहता है।''

दरवेशां दा जीवणां, रुखां दी जीराण।

फकीर का दिल वृक्ष जैसा होता है। उसके पास पापी, पुन्नी या किसी भी जाति का आए वह सबके लिए दिल में प्यार रखता है। परमात्मा हर मुल्क, हर मजहब के जीवों और पशु-पक्षियो से प्यार करता है, सबको अपना समझता है।

महाराज कहा करते थे, ''धोबी के पास चाहे तेली का कपड़ा आए, चाहे हलवाई का कपड़ा आए वह सबके कपड़े धोता है। उसे अपने करतब पर भरोसा होता है कि मैं इसमें से सफेदी जरूर निकाल लूँगा।''

सन्तों को अपने 'नाम' और अपने गुरु पर भरोसा होता है कि मैं जिसे 'नाम' दूँगा मेरे गुरुदेव उसकी संभाल जरूर करेंगे।

❋❋❋

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

रूहानी मौहब्बत अपने महबूब को सुख देने के लिए हर तरह का दुख उठाने की सिफत रखती है। अपने तन मन रूप बुद्धि यौवन प्राण और धन को मालिक की पूजा की सामग्री बनाना चाहिए। काम-वासना हमेशा अपने अंग संग होने के लिए बेकरार होती है। काम अंधेर है प्रेम सूरज है। काम स्वार्थी होता है, **प्रेम** अपना आप दान करता है। काम सुख लेकर तसल्ली पाता है, प्रेम सुख देकर सफल होता है। प्रेम नदी की तरह है काम कोयला है, प्रेम हीरे की तरह कीमती है।

प्रेम प्रीतम के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर देता है और उसे भूलकर बेकरार होता है। काम में धीरज जाता रहता है। कामी किसी काम को चित्त लगाकर नहीं कर सकता, इसमें तंगदिली कमजोरी और बुजदिली जोरो पर होती है। नफर और उदासी अंतर में घर कर जाती है। जमीर में बेचैनी और तिलमिलाहट बढ़ जाती है, इंसान अपनी नजरों में गिर जाता है। **प्रेम** इन सब अवगुणों से रहित होता हुआ रूह को दुनिया से उपराम करके मालिक से जोड़ने का जरिया है।

जीव का निज स्वभाव **प्रेम** ही है। यही प्रेम जब विषयों की तरफ चला जाता है तो मालिक से दूर करके काम कहलवाता है। जब यही प्रेम विषयों के सुख छोड़कर मालिक की तरफ लगता है तो दिव्य **प्रेम** कहलवाता है। काम और मालिक की भक्ति में फर्क सिर्फ प्रेम के रूख के कारण है।

मालिक की भक्ति और प्रेम के लिए विषयों को बाहर से छोड़ देना ही काफी नहीं बल्कि दिल से भी इनकी मौहब्बत का दूर होना जरूरी है; नहीं तो **प्रेम** की धारा मालिक की तरफ नहीं चल सकेगी। विषयों में

त्याग करने की ज्यादा जरूरत है। बाहरी लज्जतों की कशिश और मौहब्बत दूर होने पर रूहानी कशिश अपने आप प्रकट हो जाती है।

प्रेम रूह की कुदरत में शामिल है। इससे जुदाई असंभव है। **प्रेम** इंसान को मालिक के चरणों में लगाता है फिर यह किसी कामिल मुर्शिद की तलाश करता है। जिस तरह दुनियावी आशिक नंग और नमूश को छोड़कर अपने प्रीतम पर कुर्बान हो जाता है।

प्रेमी

जिन्होंने मौला की मौहब्बत में कदम रखा और उसके ईश्क में दुनिया को भूल गए, उन्हे न दोजक से काम है न जन्नत की गर्ज है। वे उधर ही जाते हैं जहाँ उनका प्रीतम उन्हें ले चले। कलंदर साहब यही फरमाते हैं, ''रब के आशिक न दोजक की आग से डरते हैं न जन्नत की गर्ज रखते हैं वे तो प्रीतम के आशिक होते हैं।''

शेख शादी साहब भी यही फरमाते हैं, ''मालिक की एकता की शराब को वही चखता है जो दुनिया और आखरत दोनों को भूल जाए। जाहद को हुरों और जन्नत की जरूरत होती है लेकिन रब का आशिक उसकी जाति की जन्नत को चाहता है क्योंकि उसके नजदीक असली जन्नत वही है।''

दुनिया एक जेलखाना है लेकिन आखरत हवशों को पूरा करने का सामान है। प्रेमी इसमें से एक दाना भी खरीदने के लिए तैयार नहीं। दुनिया के आम लोग झंझटो में फँसे हुए है लेकिन प्रेमी इनसे आजाद है। शेख शादी साहब फरमाते हैं कि किसी प्रेमी से पूछा गया कि तू दोजक की ख्वाहिश रखता है या बहिश्त की? प्रेमी ने उत्तर दिया, ''मुझसे इनके बारे में कुछ न पूछा जाए मैं तो उसी में खुश हूँ जो मालिक मेरे लिए चाहता है।''

जाहद आखरत का तालिब है और आशिक मौला का तालिब है। इसलिए जाहद और आशिक में बहुत भारी फर्क है। जाहद रियाजत के

कामों में लगकर खुश है लेकिन प्रेमी सीधा ईश्क के काम में लगा हुआ है। हजरत मौहम्मद साहब ने फरमाया है, ''दुनिया आखरत के चाहवान लोगों पर और आखरत दुनिया के बंदो पर हराम है; ये दोनों रब के बंदो पर हराम हैं।'' यही ख्याल मोहयुदीन अब्दुल कादिर जिलानी साहब फरमाते हैं, ''अगर कोई यह चाहे कि उसे आखरत के सुख प्राप्त हों तो उसे दुनिया के पदार्थों और दुनिया की हवशों से मुँह मोड़ लेना चाहिए। जो रब की रजा और रब की नजदीकी को पाना चाहता है उसे आखरत के सुखों को छोड़ देना चाहिए, आखरत के ख्याल में दुनिया को भूल जाना चाहिए।''

जिसका दिल मालिक की याद में मग्न रहता है उसका दिल और किसी तरफ नहीं जाता। चाहे वह बाहर दुनिया में विचरता दिखता है पर दुनिया का बंदा नहीं। वह केवल मालिक के जिक्र में गर्क रहता है और प्रीतम के सदा की दीदार की ख्वाहिश को छोड़कर उसके बागों और महलों की सैर करना पसंद नहीं करता।

हजरत शाह नियाज का कथन है कि हमने जप-तप प्रीतम के चरणों पर कुर्बान कर दिए हैं। हमारा मजहब उसका ईश्क, मस्ती और उसके रंग में लोटपोट होना है। हे जाहिद! तू खुदा के लिए सुन तू इस बेमतलब जोहद को छोड़कर ईश्क ईलाही की शराब को हमारी तरफ से पी, जिसका नशा सब नशो से ज्यादा है; जो सुरूर इसमे है ऐसा सरूर और किसी में नहीं।

प्रेम पोथियाँ पढ़ने-पढ़ाने से चलकर ईश्क का सबक पढ़ता है। प्रेम जाहरां-जार की गुड्डियों के जिक्र से उपराम हो चुका होता है। वह यार की सूरत को देखना चाहता है। किसी फकीर का कथन हैः

बस-बस किताबां नूं ठप मुल्ला, तू ईश्क का सबक पढ़ा सानू।
असी रज्ज लत्थे इन्हां गुड्डियां तो, सूरत यार दी असल दिखा सानू।

शाह नियाज अहमद बेरलवी फरमाते हैं, ''हे मालिक! अब हमें अपने ईश्क के सबक का एक लफ्ज पढ़ा। मैं कब तक किस्सों और

किताबों को पढ़ने में लगा रहूंगा। काफिरों को कुफ्र और दीनदारों को दीन मुबारक हो। तू हमारे दिल में अपने दर्द का एक जर्रा बख्श दे।''

हाफिज फरीद दीन अतार साहब फरमाते हैं कि दुनिया के तालिब हीजड़े हैं और आखरत के तालिब स्त्रियां हैं। मौला के तालिब ही मर्द हैं। इससे जाहिर है कि आशिक का रूतबा सबसे बड़ा है। ईश्क का हाल आशिकों के हृदय में ही कैद रहता है, यह लिखने में नहीं आ सका।

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं, ''दिल का देना वह है कि प्रेमी सीधा प्रीतम के कूचे में जाए, वह दबकर किसी कूचे में न पड़ा रहे। प्रेमी वह है जो भक्ति की अग्नि और विरह की कुठाली में मालिक को छोड़कर और सब ख्यालों की मैलों से साफ हो चुका है। प्रेमी का मन हरिदर्शन को इस तरह तड़फता है जिस तरह प्यासा जल के बिना आतुर होता है। उसके मन और तन के अंदर हरि का प्रेम बाण लगा हुआ है। उसका प्रीतम, सच्चा मित्र हरि के सिवाय कोई नहीं होता।''

हरि दर्शन को मेरा मन बहुत तृप्ते।
ज्यों त्रिखा बन्त बिन नीर, मेरा मन प्रेम लगो हरि तीर।

मेरा मन तन प्रेम लगा हरि बाण जिओ।
मेरा प्रीतम मित्र हरि पुरख सुजाण जिओ।

प्रेमी की प्रीत लोक-परलोक से टूटकर मालिक के चरण कमलों में जुड़ जाती है।

साँची प्रीत हम तुम स्यों जोरी, तुम स्यों जोर अवर संग तोरी।
चरण कमल स्यों लागी प्रीत, साँची पूर्ण निर्मल रीत।

उसकी लिव अंदर से मालिक के साथ लग जाती है। उसे मालिक को छोड़कर सब कुछ कूड़ लगता है। उसे जब तक प्रीतम न दिखे कपड़े और भोग सब डरावने दिखाई देते हैं।

निहीं महंजा तो नाल व्याह न्हो कड़ावे डेक।
कप्पड़ भोग डरावने जिच्चर पिरी न डेक।

शेष अगले अंक में.....

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी अहमदाबाद में 6, 7 व 8 अगस्त - 2010 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राउंड के सामने,
(कांकरिया झील के पास),
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे:
शैलेष शाह - 93270 11142, 94267 26583